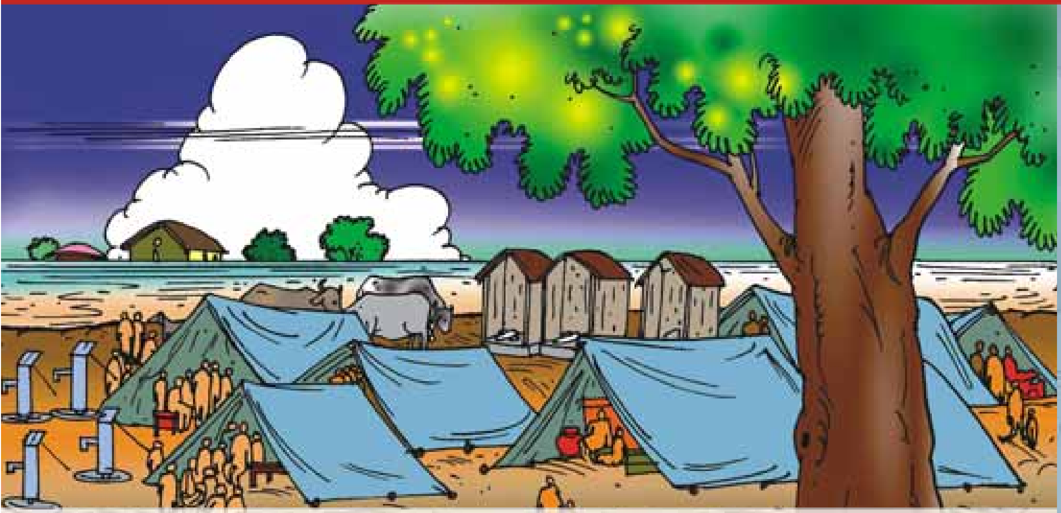

ActionAid works with poor and excluded people in over 54 countries worldwide and in 24 States in India to end poverty and injustice. Throughout the world, we claim legal, constitutional and moral rights to food and livelihood, shelter, education, healthcare, dignity and voice in decisions that affect their lives.

India Country Office
R 7, Hauz Khas Enclave
New Delhi 110016.
Tel: +91 11 40640500
Fax +91 11 41641891
www.actionaidindia.org

International Head Office
PostNet Suite #248, Private Bag X31
Saxonwold 2132, Johannesburg
South Africa
Tel: +27 11 731 4500
Fax: +27 11 880 8082

actionaid

बाढ़ से पहले हमारी तैयारी
बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी
बाढ़ के बाद हमारी जिम्मेदारी

actionaid

बाढ़ से पूर्व की तैयारी में हमारा पहला प्रयास वातावरण निर्माण के रूप में होगा

- वातावरण निर्माण का अभिप्राय लोगों में यह भावना जगानी है कि बाढ़ से मुकाबले की तैयारी हम कैसे करें।
- वातावरण निर्माण के लिए सामूहिक बैठक, नुक्कड़ नाटकों, पोस्टर लगाकर व प्रभात फेरी का प्रयोग किया जा सकता है।
- सामूहिक बैठक में पंचायत प्रतिनिधि, सभी धर्म व सभी वर्गो के स्त्री-पुरूष बच्चे-बूढ़े, शिक्षक, ए.एन.एम, आशा, आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ता एवं अन्य सभी लोग भाग ले सकते हैं।
- बैठक के दौरान बाढ़ से पहले, बाढ़ के दौरान व बाढ़ के बाद के लिए अलग-अलग कार्य दल बनाए जा सकते हैं।
- बैठक के दौरान ऐसे अतिउत्साही युवक-युवतियों या लोगों की पहचान की जा सकती है, जो बाढ़ के दौरान किन्हीं भी स्थितियों का सामना करने का हौसला रखते हों।

पूर्व तैयारी में मानचित्रण निर्माण व योजना निर्माण महत्वपूर्ण है।

- सामूहिक बैठक के बाद मानचित्रण निर्माण में भी सभी लोग भाग ले सकते हैं। मानचित्रण निर्माण जमीन पर या बड़े आकार के कागज पर किया जा सकता है।
- मानचित्रण निर्माण के दौरान सर्वाधिक जोखिम वाले इलाकों, परिवारों व लोगों को चिन्हित किया जा सकता है। उनकी सूची बना लेनी चाहिए।
- सुरक्षित मार्गों की पहचान की जा सकती है।
- सुरक्षित व ऊँचे स्थान की पहचान की जा सकती है, जो आश्रय स्थल के रूप में होगा।
- मानचित्रण निर्माण के दौरान उभरे विषयों के लिए योजना निर्माण किया जा सकता है।
- मानचित्रण निर्माण व योजना निम्राण में पूर्व के अनुभव का अधिक सहयोग मिल सकता है।

योजना निर्माण, राहत केंद्रों की स्थापना तथा पूर्वाभ्यास जरूरी है।

- योजना निर्माण के अंतर्गत वृद्धों, विकलांगों, गर्भवती महिलाओं, धात्री माताओं एवं छोटे बच्चों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है।
- उन्हें सहयोग के द्वारा सुरक्षित मार्गों द्वारा ऊँचे आश्रय स्थल तक लाने की ट्रेनिंग होनी चाहिए।
- इलाके में ऊँचा आश्रय स्थल हो, तो उस पर अस्थायी रूप से टेंट, शौचालय व हैंडपंप की व्यवस्था होनी चाहिए।
- पहले से ऊँचा आश्रय स्थल न हो, तो बाढ़ के पहले उसे बना लेना चाहिए, तथा उस पर टेंट, शौचालय व हैंडपंप जैसी सुविधाएं बहाल कर लेनी चाहिए।
- आश्रय स्थल पर पहले से शौचालय बने हों, और हैंडपंप लगे हों, तो उन्हें ठीक-ठाक करवा लेना चाहिए।
- कार्यदल के लोगों को राहत कार्यों के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वह बचाव कार्य कर सकें। पूर्वाभ्यास भी करना चाहिए।
- प्रत्येक कार्यदल के सदस्यों को आपस में परस्पर तालमेल जरूरी है।

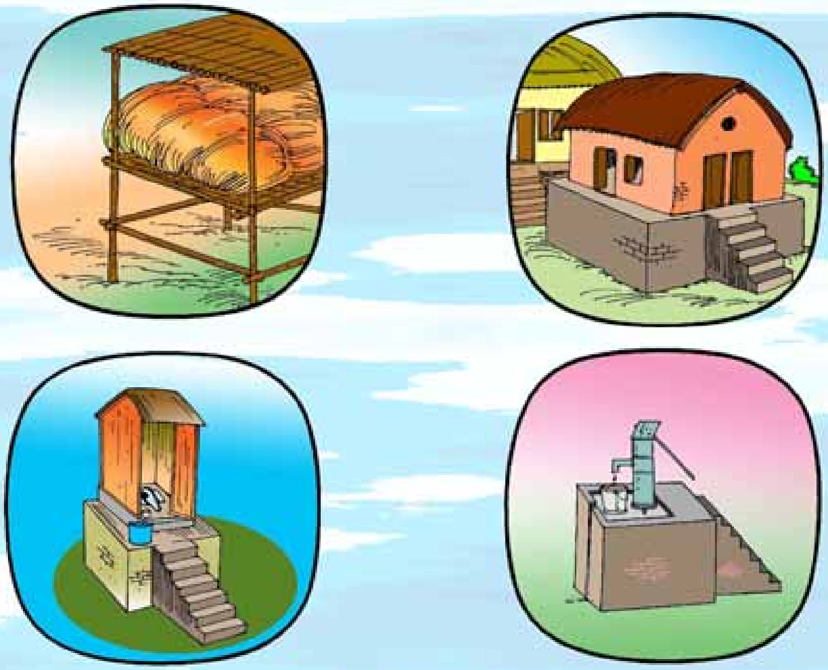

बाढ़ के पूर्व की हमारी तैयारी

- आश्रय स्थल के रूप में ऊँचे स्थान की खोज व निर्माण के साथ-साथ अन्य उपाय भी जरूरी है।
- अपने घरों को ऊँचा बनाना चाहिए।
- घर, शौचालय व हैंडपंप पहले से नीचे भी हों, तो ऊँचा करवा लेना चाहिए।
- पशु आहार रखने के लिए ऊँचा मचान बनाकर उनके सुरक्षित रखने के उपाय कर लेने चाहिए।

बाढ़ के पूर्व की हमारी तैयारी

- राहत कार्यो के दौरान डूबते लोगों को बचाने के लिए विविध पारम्परिक और वैकल्पिक संसाधन जुटाये जा सकते हैं।
- पारम्परिक संसाधन में गाड़ियों के ट्यूब और लाइफ जैकेट हैं। इसमें रस्सियाँ भी बेहद उपयोगी होती है।
- वैकल्पिक संसाधनों में पानी की खाली बोतलें हैं, जो प्लास्टिक की होती है।
- प्लास्टिक की खाली - बोतलों को एक डोरी के द्वारा आपस में श्रृखंलावद्ध तरीके से बांध कर कमर में बांध लिया जाता है। बोतलों के ढक्कन एकदम कसकर बंद हो, ताकि उसकी हवा बाहर न निकले। बोतलों में छेद न हो।
- हवा भरी बोतलों को कमर में बांध कर पानी उतरने पर व्यक्ति डूबता नही है क्योंकि बोतलों में भरी हवा उसे डूबने नहीं देती।
- इस तरह के अनेक विकल्प स्थानीय स्तर पर विकसित व प्रयोग किए जा सकते हैं।

actionaid

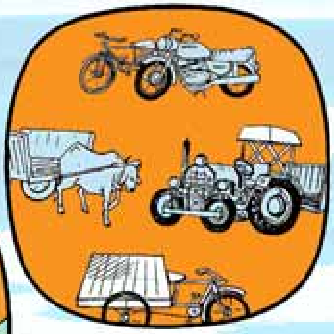

बाढ़ के पूर्व की हमारी तैयारी

- बचाव कार्य के लिए स्थानीय संसाधन मोटर साइकिल, साइकिल, ट्रैक्टर, बैलबाड़ी व ठेला आदि को चिन्हित कर लेना चाहिए। यह संसाधन सुरक्षित स्थान तक पहुँचने के लिए मददगार होंगे।
- यदि संभव हो, तो उपरोक्त संसाधनों को जुटा लेना चाहिए।
- आवश्यक हुआ, तो उक्त संसाधनों की मरम्मत व देखभाल कर लेनी चाहिए।
- डूबने से बचाव कार्य के लिए नावों का इस्तेमाल अत्यंत आवश्यक है।
- नई नाव का निर्माण किया जाना चाहिए।
- यदि नाव पहले से हो, तो उसकी मरम्मत वगैरह कर ली जानी चाहिए।
- चाव कार्य के लिए जरूरत से अधिक नाविकों की तलाश कर लेना चाहिए।
- नाविक मुस्तैदी से अपना काम करें, उनमें यह भावना जगानी चाहिए।
- पूर्व तैयारी में हमें कुछ अत्यंत जरूरी चीजें अवश्य जुटा लेनी चाहिए, जो बाढ़ के दौरान अत्यंत उपयोगी व आवश्यक होती है।
- बाढ़ के दौरान भोजन सर्वोच्च प्राथमिकता का विषय है। वहाँ कुछ समय तक अपने स्तर से भोजन की पर्याप्त व्यवस्था पूर्व में ही अवश्य कर लेनी चाहिए।
- खा पदार्थ सूखे होने चाहिए, ताकि वह कुछ समय तक ठीक हालत में रह सकें। वह सामान हैं
  चूड़ा गुड़ चीनी आयोडीन नमक सत्तू चना आदि
- उपरोक्त सूखे खा पदार्थ बिना पकाए भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं।
- कुछ जरूरी बर्तन भी रख लेना चाहिए- बाल्टी, थाली, कटोरा, लास, चम्मच, लोटा आदि।
- पशु आहार भी रख लेना चाहिए।

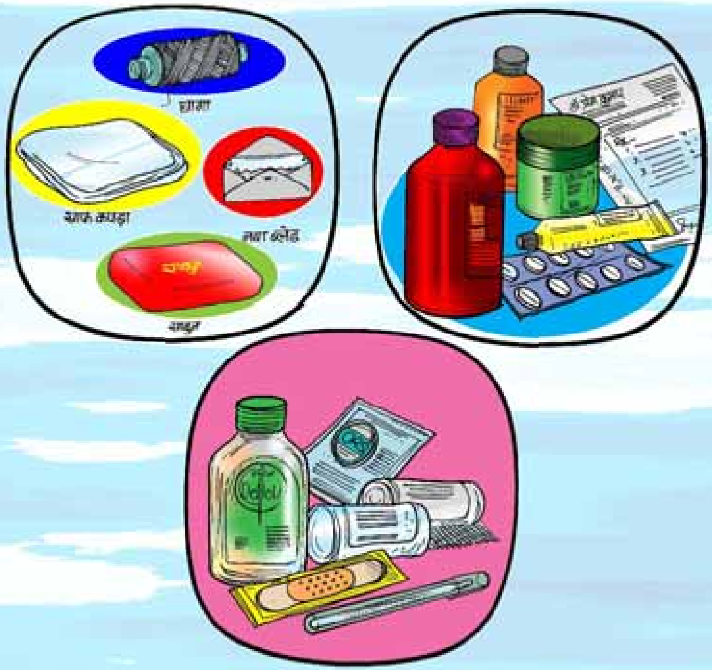

बाढ़ के पूर्व की हमारी तैयारी

- बाढ़ के दौरान स्वच्छता व स्वास्थ्य का सबसे अधिक ध्यान रखना चाहिए, इसके लिए कुछ जरूरी दवाओं आदि का पूर्व में ही संग्रह कर लेना चाहिए।
- बुखार, सर्दी-खांसी, जॉडिंस, उल्टी-दस्त, चोट व दर्द की दवाएं एकत्र कर लेनी चाहिए।
- बैंडेज, रूई, डेटॉल, बैंडेड और थर्मामीटर वगैरह उपल ध हों, तो उन्हें एक जगह जुटा लेना चाहिए।
- जो दवाएं पहले से चल रही हो, उन्हें तो अवश्य रख लेना चाहिए।
- बच्चों की नियमित दवाइयाँ, विटामिन आदि रख लेनी चाहिए।
- सर्पदंश की दवाई भी रख लेनी चाहिए।
- ओ.आर.एस.   जीवन रक्षक घोल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों व आँगनबाड़ी केंद्रों पर उपल ध रहता है
- प्रसव किट   साफ कपड़ा, धागा, नया लेड व साबुन

बाढ़ के पूर्व की हमारी तैयारी

- कुछ जरूरी कागजात अवश्य जुटा लेने चाहिए, जो अति महत्वपूर्ण दस्तावेज होते हैं। साथ ही बहुमूल्य सामानों को भी पहले ही एकत्र कर लेना चाहिए।
- जरूरी दस्तावेजों में निम्न कागजात हो सकते हैं -
- जमीन जायदाद के कागजात
  - पासबुक
  - बी.पी.एल.कार्ड
  - जॉब कार्ड
  - जन्म व मृत्यु प्रमाण-पत्र
  - शैक्षणिक प्रमाण-पत्र
  - राशन कार्ड
  - हेल्थ कार्ड
  - डाक्टरी रिपोर्ट एवं दवाइयों के नाम
- अंत्यत बहुमूल्य सामानों में सोने चांदी के गहने- जेवरात व रूपए-पैसे होते हैं, जिन्हें पहले ही जुटाकर सुरक्षित तरीके से रख लेना चाहिए।

बाढ़ के पूर्व की हमारी तैयारी

❖ पूर्व की तैयारियों में जरूरी कुछ ऐसे सामान होते हैं, जिनको एकत्र करके रख लेना चाहिए।

- बाल्टी, मग, लोटा
- बर्नर वाला छोटा गैस भरा सिलिंडर
- लालटेन
- टॉर्च-बैटरियाँ
- मचिस, मोमबत्तियाँ
- किरासन तेल
- कपड़े
- तारपोलीन प्लास्टिक शीट
- लाठी, डंडा या छड़ी
- खूँटे
- कैंची
- रस्सियाँ
- साबुन
- लीचिंग पाउडर
- हैलोजन की गोलियाँ
- ओ.आर.एस आदि

बाढ़ के पूर्व की हमारी तैयारी

- बाढ़ आने से पूर्व सूचनाओं व चेतावनियों पर पूरा ध्यान देना चाहिए।
- जिला बाढ़ जनयंत्रण कक्ष, केंद्रीय जल आयोग, बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल और स्थानीय समितियों आदि विश्वस्त स्रोतों से बाढ़ संबंधी सूचना तत्क्षण प्राप्त की जाती रहनी चाहिए।
- सूचना प्राप्त करने के बाद कौन सी सूचना, कब, कहाँ से प्राप्त हुई, उसे एक रजिस्टर में दर्ज जरूर किया जाना चाहिए।
- प्राप्त सूचना, जानकारी व चेतावनी को तुरंत समुदाय में दी जानी चाहिए।
- समुदाय में सूचना, जानकारी व चेतावनी को विविध तरीके से पहुँचाया जा सकता है। इनमें से एक का या जरूरी हुआ तो सबका इस्तेमाल किया जा सकता है।
  - मेगाफोन द्वारा
  - डुगडुगी बजाकर
  - सार्वजनिक भवनों व स्थलों पर पर्चा पोस्टर चिपकाकर
  - फोन मोबाइल द्वारा
  - टीवी द्वारा
  - रेडियो से
  - अखबारों द्वारा
- मेगाफोन के सायरन का इस्तेमाल केवल नितांत जरूरी होने पर करना चाहिए।
- अफवाह तथा भ्रामक सूचनाएं समुदाय में एकदम नहीं दी जानी चाहिए।

बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी

- बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी काफी बढ़ जाती है। इसमें काफी मुस्तैदी से बाढ़ पीड़ितों को राहत पहुँचाने की पहल होनी चाहिए।
- सर्वप्रथम बाढ़ की सूचना प्राप्त होते ही अत्यंत जोखिम वाले लोगों को सुरक्षित मार्गों से ऊँचे आश्रय स्थल तक पहुँचाना चाहिए। ऐसे लोगों में वृद्ध, गर्भवती महिलाएं, धात्री माताएं, बीमार लोग, विकलांग एवं बच्चे हो सकते हैं।
- आश्रय स्थल पर तुरंत उनके खाने-पीने तथा स्वास्थ्य व स्वच्छता के उपाय शुरू करने चाहिए।
- बच्चों को पानी के किनारे जाने या पानी में उतरने से रोकना चाहिए।
- आश्रय स्थल पर स्वच्छता को बनाए रखा जाना चाहिए। बच्चों व सभी लोगों को शौचालय के इस्तेमाल करने चाहिए। खुले में मल-मूत्र से संक्रमण फैल सकता है। शौच के बाद हाथ की सफाई पर जोर देनी चाहिए।
- मवेशियों-पशुओं को भी आश्रय स्थल पर सुरक्षित जगह रखा जाना एवं उनके चारे की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए।

बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी

- बाढ़ के दौरान प्राय अनेक प्रकार के संक्रमण फैलने का खतरा बना रहता है। स्वास्थ्य व स्वच्छता से जुड़ी हर छोटी-छोटी बातों का ऐसे समय में खयाल रखा जाना चाहिए।
- संक्रमण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण श्रोत पानी होता है। ऐसे समय में साफ पानी पीना चाहिए। अथवा हैलोजन की गोली से पानी को स्वच्छ करके ही पीना चाहिए।
- हैलोजन गोलियों के इस्तेमाल का तरीका
  - हैलोजन गोलियाँ दो तरह की शक्तियों पावर में उपल ध होती हैं। एक गोली मिलीग्राम की होती है लीटर पानी साफ करती है। दूसरी गोली मिलीग्राम की होती है जो लीटर पानी साफ करती है।
  - हैलोजन गोली को पहले चूर कर पाउडर बना लें।
  - जिस पानी में पाउडर को मिलाना है, वह पानी किसी धातु के बर्तन में रखा नहीं हो। पानी प्लास्टिक के या स्टेनलेस स्टील के बर्तन या बाल्टी में रखा हो।
  - उस पानी में हैलोजेन गोली का पाउडर डाल दें। उसे पानी में किसी बर्तन से अच्छी तरह मिला दें। ढंक कर आधा घंटा छोड़ दें।
  - आधे घंटे बाद ही पानी पीया जाना चाहिए।
  - हैलोजन गोलियों की शीशी बच्चों की पहुँच से दूर रखें।
  - हैलोजन की गोलियाँ खुली हवा में न छोड़ें, इससे गोलियाँ की शक्ति कम हो जाती है।
- हैलोजन गोलियाँ इस्तेमाल न भी करनी हो, तो पानी को पहले उबाल कर और ठंडा कर के पीएं। पानी को सदा ढंक कर रखें, उसमें हाथ व उंगलियाँ न डुबोएं।
- हैलोजन गोलियों का इस्तेमाल बाढ़ के बाद भी किया जाना चाहिए।

बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी

- बाढ़ के दौरान स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखे जाने की जरूरत होती है। विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं के प्रसव व बच्चों के टीकाकरण
- कार्यदल में ऐसी प्रशिक्षित महिलाएं होती हैं, जिन्हें विपरीत परिस्थितियों में भी प्रसव कार्य कराने का विशेष अनुभव होता है।
- महिलाओं का प्रसव अत्यंत नाजुक मामला होता है, अतएव सारे एहतियात बरतते हुए सुरक्षित प्रसव की कोशिश होनी चाहिए। प्रसव के लिए प्रसव किट का प्रयोग किया जा सकता है।
- नवजात व छोटे बच्चों को नियमित रूटीन टीकाकरण जारी रखा जाना चाहिए।
- सर्पदंश का खतरा भी बाढ़ के दौरान काफी बढ़ जाता है। सर्पदंश से पीड़ित व्यक्ति को बचाने के लिए एक कारगर तरीका अपनाया जा सकता है। जहाँ सांप ने काटा हो, उसके आगे-पीछे दतवन जैसे लकड़ी को डोरी से कसकर बांध देना चाहिएश ताकि विष आगे न बढ़े। फिर उस सांप काटी हुई जगह को साफ   नए   लेड से चीरकर विष दबा-दबाकर निकाल देना चाहिए। तद्उपरांत उचित दवा दी जानी चाहिए।

बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी

- बाढ़ के दौरान बच्चों में संक्रमण का खतरा सबसे अधिक बना रहता है, जिससे उल्टी, दस्त, डायरिया आदि होने की संभावना रहती है। इसकी तुरंत उचित देखभाल न की जाए, तो कभी-कभी यह जानलेवा भी बन जाता है। ऐसे में जीवनरक्षक घोल के रूप में ओ.आर.एस. देना नितांत आवश्यक हो जाता है।
- ओ.आर.एस. घोल बनाने की विधि उसे पैकेट पर लिखी होती है।
- एक लीटर पानी अर्थात् लास पानी में ओ.आर.एस. के पैकेट का पूरा पाउडर डाल दें।
- पाउडर को पानी में अच्छी तरह घूलाएं।
- अब ओ.आर.एस. घोल तैयार है। उसे सदा ढंक कर रखना चाहिए।
- हर उल्टी-दस्त के तुरंत बाद रोगी को वह घोल थोड़ा-थोड़ा पिलाएं।
- एक बार बनी घोल केवल घंटे तक इस्तेमाल करें। उसके बाद उसका उपयोग नहीं करना चाहिए।
- घोल के लिए इस्तेमाल किया गया पानी बिल्कुल साफ होना चाहिए।
- हो सके तो साफ पानी के लिए पहले पानी को उबाल कर ठंडा कर लें।
- ओ.आर.एस. घोल न हो, तो सादी चाय, मांड़ या दाल का पानी दे सकते हैं।
- उल्टी -दस्त व डायरिया का प्रकोप बाढ़ के बाद भी होता है। अतएव रोगी को ओ.आर.एस. की घोल ऐसी स्थिति में हमेशा दिया जाना चाहिए।

बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी

- बाढ़ जैसी विभीषिका अनेक दुख और बीमारियों को लाती है। सामान्य बीमारियों के अलावा मनोरोग अथवा सदमें के रोग से बाढ़ पीड़ितों को ग्रस्त होते पाया जाता रहा है। इस सदमें से उन्हें उबारने के लिए हर संभव व कारगर कदम उठाया जाना चाहिए।
- उक्त रोग प्रायः बच्चों में देखा गया है। बाढ़ जैसी आपदा की आपाधापी में वह उपेक्षा के शिकार हो जाते हैं।
- उनको कोई छोटा, मामूली सा खिलौना या सामान उस दौरान खो जाए और कोई उस पर ध्यान न दें, तो स्वयं को उपेक्षित मानकर वह सदमें का शिकार हो जाते हैं।
- इसलिए उन्हें सदमें से बाहर निकालने या सदमा ना लगे, इसके लिए बराबर प्रयास करना चाहिए।
- शिक्षा, मनोरंजन तथा अन्य क्रिया-कलापों का वातावरण पैदा करना चाहिए और उससे बच्चों को जोड़ना चाहिए।
- बच्चों के साथ यह स्थिति बाढ़ के बाद भी बनी रहती है। इसलिए उनके साथ यह व्यवहार आगे भी जारी रखना चाहिए।

बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी

- बाढ़ के दौरान भूखमरी और त्राही-त्राही की स्थिति हो जाती है। इसी विषम परिस्थिति का लाभ उठाकर मानव व्यापारी अपना जाल फैलाते हैं। बच्चों, लड़कियों, व महिला-पुरूषों की खरीद-फरोख्त ूठे ंसे देकर होने लगते हैं। देह व्यापार के लिए लड़कियों की खरीद-बिक्री होती है तो बाल मजदूरी के लिए बच्चों की। इस पर पूरा ध्यान कंद्रित कर इसके रोकने या बचाव के उपाय किए जाने चाहिए।
- बच्चों, लड़कियों व महिलाओं को बताया जाना चाहिए कि ऐसे लोगों से बचें, उनकी बातों,प्रलोभन व ंसों में न आएं।
- ऐसे मानव-व्यापारियों पर कड़ी चौकसी बरती जानी चाहिए ताकि वे सफल न हो सकें।

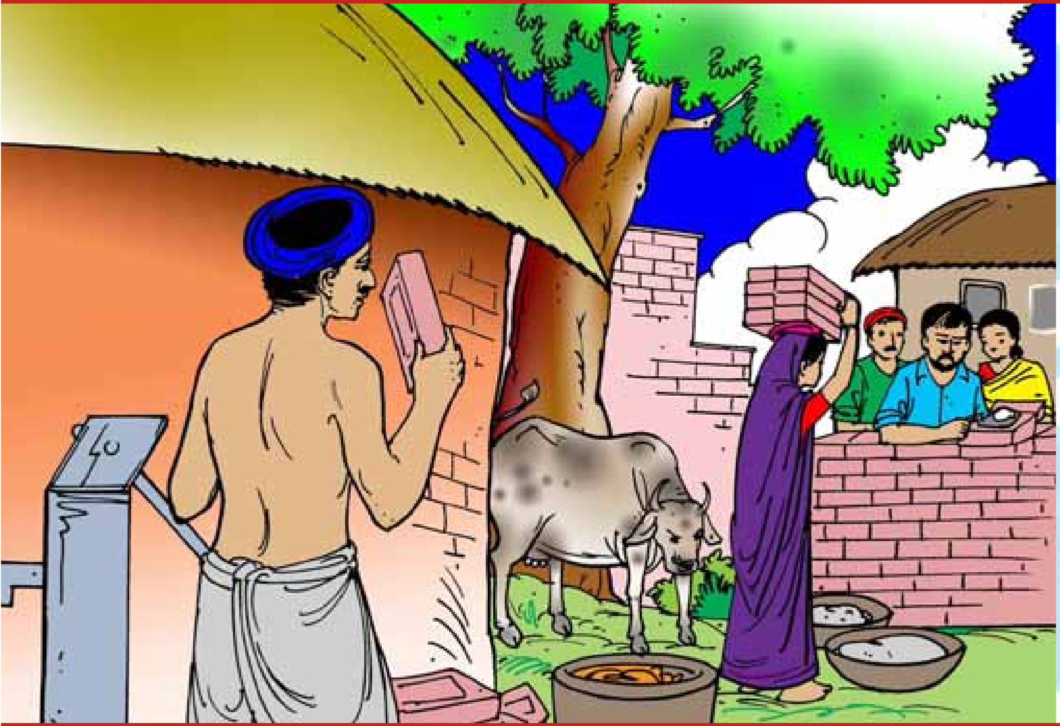

बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी

- असल जिम्मेदारी बाढ़ के बाद पीड़ितों के पुनर्वास को लेकर होती है। यह सदमें के गहरे प्रभाव का वक्त होता है। बाढ़ पीड़ितों का सब कुछ उजड़ चुका होता है और उनके सामने अंधेरा छा जाता है। उससे उन्हें बाहर किालने की लगातर सार्थक प्रयास करने चाहिए। सरकारी आर्थिक मदद से यह संभव हो सकता है।
- बाढ़ पीड़ितों के पुनर्वास यानी टेंटों से लेकर उनके घर वापसी तक का सफर बहुत कष्टदायक होता हैं। उनके उजड़े, बाढ़ में डूबे व तहस-नहस घर को दुबारा बनवाने के लिए सरकारी संस्थाओं, एजेंसियों तथा स्वयं सेवी संस्थाओं के साथ परस्पर तालमेल कर सार्थक प्रयास किया जाना चाहिए।
- बाढ़ पीड़ितों में इस बात का हौसला भरना चाहिए कि सब कुछ ठीक हो जायेगा। ?
- उनके घर और शौचालय व हैंडपंप को दुरूस्त करवाना चाहिए।
- पशुओं (गाय, भैंस बकरी आदि) के रहने और खाने-पीने की भी व्यवस्था करनी चाहिए। ग्रामीणों का उनसे मानसिक जुड़ाव होता है। यहाँ यह महतवपूर्ण है कि घरेलु पशु ग्रामीणों के जीवन में काफी सहायक होते हैं।
- सबसे अधिक ध्यान तो बच्चों पर दिया जाना चाहिए। गहरे सदमें से उबारने के लिए उन्हें शिक्षा, मनोरंजन तथा कियात्मक गतिविधियों से जोड़ना चाहिए।

बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी

- प्राय देखा गया है कि बाढ़ खत्म होने के बाद सड़ी-गली चाजों से भयानक संक्रमण फैलता है। संक्रमण से तरह-तरह की बीमारियाँ फैलने के खतरे रहते हैं। हैंडपंप और कुएं का पानी संक्रमित हो जाता है। उनके पानी के इस्तेमाल से पहले उसे स्वच्छ करना जरूरी है। इसके लिए लीचिंग पाउडर सबसे प्रभावकारी है।
- हैंडपंप और कुंए के पानी को लीचिंग पाउडर से स्वच्छ किया जा सकता है। पानी को स्वच्छ करने की बात बाढ़ के दौरान भी लागू होती है। लीचिंग पाउडर इस्तेमाल ऐसे करें
  - माचिस की तीन डिबिया लें। उनमें उपरी सतह तक बराबर से लीचिंग पाउडर भरें।
  - तीनों डिबिया की लीचिंग पाउडर एक बाल्टी में पानी लेकर घोलें।
  - घोलने के बाद पानी को मिनट तक थिराने के लिए छोड़ दें। इससे लीचिंग पाउडर का चूना नीचे बैठ जाएगा।
  - थिराए हुए चूने को छोड़कर उपर का पानी दूसरी बाल्टी में डाल दें।
  - इस पानी को बाल्टी के सहारे कुएं में नीचे डालकर डुबाएं। रस्सी के सहारे हिला-हिलाकर बाल्टी से कुएं के पूरे पानी को हिलाएं।
  - लीचिंग पाउडर की घोल को कुआं में डालने के से घंटे के बाद ही उस कुएं का पानी पिया जाना चाहिए।

बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी

- ग्रामीण इलाकों में पेय जल के स्रोत के रूप में कुआं और हैंडपंप हैं। कुओं की तरह हैंडपंप का पानी भी लीचिंग पाउडर की घोल से स्वच्छ बनाया जा सकता है। लीचिंग पाउडर की घोल उसी तरह तैयार की जाएगी, जिस तरह कुओं के लिए तैयारी की विधि है।
- लीचिंग पाउडर की घोल इस्तेमाल करने के पहले चापाकल को चलाकर पानी गिरा दें। ऐसा लगभग मिनट तक करना चाहिए।
- अब चापाकल का हेड उपरी पूरी बॉडी खोलकर अलग करें। लीचिंग पाउडर की घोल हैंडपंप की पाइप में डाल दें, जो जमीन के भीतर गई है। - घंटे तक छोड़ दें।
- - घंटे बाद लगभग मिनट तक लगभग - बाल्टी चापाकल चलाकर पानी गिरा दें।
- अब हैंडपंप का पानी एकदम स्वच्छ है। उसे पीया जा सकता है।

बाढ़ के दौरान हमारी भागीदारी

- बाढ़ के बाद जहाँ-तहाँ जल-जमाव , मरे हुए जानवरों और गंदगियों की ढेर जमा हो जाती है। यह सर्वाधिक संक्रमण का समय होता है। इस दौरान संक्रामक बीमारियों के हाने या फैलने का खतरा सबसे अधिक रहता है।
- इससे बचने के लिए मरे हुए जानवरों को जहाँ-तहाँ खुला पड़ा न रहने दें। उन्हें जमीन में गड्ढा खोदकर दफना देना चाहिए। यह काम घर से दूर करना चाहिए।
- कूड़ों-कचरों को एक जगह इकटठ्ा करें। उन्हें भी खुला पड़ा न छोड़ें बल्कि जमीन में गाड़ देना चाहिए या जला देना चाहिए।
- लगभग ग्राम यानी तीन बड़े चम्मच भर लीचिंग पाउडर का एक लीटर पानी में घोल तैयार कर लें।
- इस घोल को गंदगी वाले स्थानों पर छिड़काव करें।
- सूखा लीचिंग पाउडर असरदार नहीं होता है। इसलिए सूखे पाउडर का छिड़काव नहीं करना चाहिए।